Rupali Choubey

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

Qu 1 (A) कमेटा श्रेणी

- म.प्र. में नर्मदा नदी को छोड़कर केन्द्र नदी नालों द्वारा संग्राहित जल समूहों को कमेटा श्रेणी कहते हैं

(B) म.प्र. कोडवेड मीथेन गैस क्षेत्र

- कोडवेड मीथेन गैस क्षेत्र रिलायंस इण्डस्ट्रीज द्वारा खोजा गया
- यह शहडोल के सुहागपुर क्षेत्र में स्थित

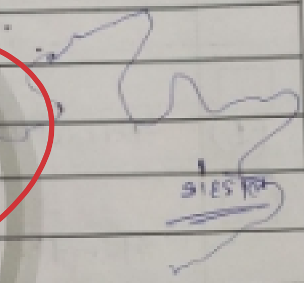

(C) म.प्र. वेयरहाउसिंग एंड लॉजिस्टिक्स कॉर्पोरेशन

- इसकी स्थापना 1958 में हुई
- यह संस्था राज्य में कृषि तथा उससे संबद्ध उत्पादों के वैज्ञानिक भण्डारण में संलग्न स्वायत्तशासी संस्था है
- केन्द्रीय वेयरहाउस कमेटी से राज्य में वेयरहाउस का निर्माण व विघटन

(D) शासकीय अनुसंधान व प्रशिक्षण केंद्र

- यह वाराणसी (उ.प्र.) में स्थित केंद्र है
बीज परीक्षण का कार्य करता

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

(D) राष्ट्रीय बीज अनुसंधान प्रशिक्षण

यह केंद्र वाराणसी (उ.प्र.) में स्थित है

- कार्य - बीजों का परीक्षण, परिणाम व HRD का कार्य करना
- मानक बीज परीक्षण प्रयोगशाला की निगरानी
- बीज कांग्रेस व कार्यशाला का आयोजन

(E) जबाली योजना

- संबंध - आदिवासी जनजाति
- प्रारंभ - 2005
- उद्देश्य - वेश्यावृत्ति में संलग्न महिलाओं व बच्चों के उत्थान व सहायता
- इसके अंतर्गत उक्त जनजाति नट, बेड़िया व सांसी आती है।

(F) औसत ताप

(Mains Answer Sheet)

संख्या

(क) शैवाल प्रस्फुटन

- जलाशयों में पोषक तत्वों की अधिक मात्रा होने पर प्लवित शैवालों में अत्यधिक वृद्धि देखी जाती है जिसे शैवाल प्रस्फुटन कहते हैं।
- यह वृद्धि जल की गुणवत्ता को कम करती
- जलीय जीवों की पारिस्थितिक तंत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है

(ख) ला-नीना

- यह एक प्रतिसागरीय घटना
- इसकी उत्पत्ति पश्चिमी प्रशांत महासागर में तब होती जब पूर्वी प्रशांत महासागर से एल-नीनो का प्रभाव समाप्त हो जाता है
- इसके प्रभाव से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वर्षा की स्थिति बनती है

(ग) मेघालय का पठार

- यह पठार भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित
- इस पठार पर गारो, खासी, जयंतिया पहाड़ियों का मिलन हुआ
- शिलांग इस पठार की सबसे ऊंची चोटी है
- वर्षा अधिक होने के कारण जैवविविधता की दृष्टि से उन्नत पठार है

संख्या (Mains Answer Sheet)

(J) बादलो का फटना

बादलो का फटना वर्षा की चरम स्थिति
- इसके फटने से कम समय में तीव्र गति से वर्षा होती है जिससे क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है
- 2013 उत्तराखंड की त्रासदी इसी का परिणाम थी

(K) भारत में सुनामी चेतावनी प्रणाली
- यह प्रणाली 2007 से काम कर रही
- यह प्रणाली हैदराबाद में स्थित राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र के जरिए पूरे हिंद महासागर क्षेत्र के लिए सुनामी सेवा प्रोवाइडर के तौर पर चेतावनी जारी देता
- इसके अंतर्गत 10 मिनट में सागर में भूकंप का पता व 20 मिनट में चेतावनी जारी करते है

(L) सारगैसो सागर
- यह उत्तरी अटलांटिक महासागर में 20°-40° उत्तरी अक्षांश व 35°-75° पश्चिमी देशांतर के मध्य
- यह शांत व स्थिर क्षेत्र है तथा यहां तैरती घास मिलती है
- पुर्तगाली भाषा में घास को सारगैसो कहा जाता है इसलिए इसे सारगैसो सागर कहते है

2 3 2
Eनोट 2

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

(M) ड्रैल वर्ग

यह स्थलीयक्षेत्रों में पवन अपरदन से बनी स्थलाकृति

– ड्रव निर्माण – पवन के मार्ग में कुलायम कठोर चट्टाने आती है तो कुलायम चट्टान अपरदित हो जाती व कठोर चट्टानों के टीले दिखाई देते जिन्हे ड्रैल वर्ग कहते हैं

(O) आशीष स्वास्थ्य प्रबंधकल्प मिशन

(P) फर्टिगेशन :

यह कृषि से संबंधित एक विधि है

इसके अंतर्गत खेतो में ड्रिप सिंचाई के माध्यम से उर्वरक के साथ सिंचाई भी किया जाता है

पानी के साथ उर्वरक देने से उर्वरको की दक्षता बढ़ जाती है।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या: Q 2 (A)

बुंदेलखंड के पठार पर संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत

यह म.प्र. में स्थित महत्व उच्च भूमि का उत्तर-पूर्वी पठार है। यहां सिद्धबाबा चोटी (1172मी) इस पठार की सबसे ऊंची चोटी है

इस पठार की विशेषताओं को हम इस प्रकार देख सकते हैं-

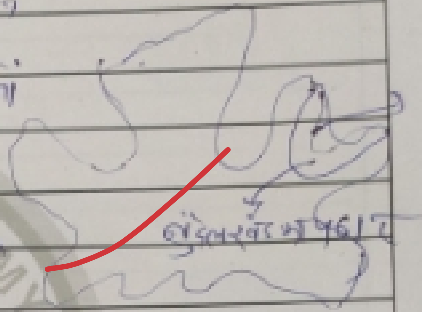

जिले - इसके अंतर्गत छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, शिवपुरी आदि आते

मृदा - काली, लाल-पीली मिट्टी, कछारी मिश्रित मिट्टी

जलवायु - महाद्वीपीय जलवायु गर्मी में अधिक गर्मी व ठंडी में अधिक ठंडी

कृषि - गेहूं, ज्वार, अलसी, सरसों आदि

वन - सागौन, तेंदूपत्ता, नीम, पलाश आदि

खनिज - हीरा, ग्रेनाइट

उद्योग - औद्योगिक [illegible] क्षेत्र, हीरे, ग्रेनाइट संबंधित उद्योग, बीड़ी उद्योग, सीमेंट

सांस्कृतिक परिदृश्य - खजुराहो (छतरपुर) नागर शैली मंदिर, दतिया में पीताम्बरा पीठ, सोनागिरी आदि

- नृत्य - राई, बधाई नृत्य प्रसिद्ध

इस तरह बुंदेलखंड का पठार अपनी विशेषताओं के लिए जाना जाता, हीरे के उत्पादन में पन्ना में रंगी पठार पर होता है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(Mains Answer Sheet)

2 | 13

म.प्र. की वन संपदा का वर्णन करें?

म.प्र. भारत का सर्वाधिक वनाच्छादित वाला राज्य है 94689 वर्ग किमी. भाग में जो से संपूर्ण राज्य के 30% के बराबर है तथा यहाँ वनों में विविधता भी देखने को मिलती।

वन संपदा के आधार पर राज्य के वनों को दो भागों में बांट सकते

- प्रमुख वन
  - सागौन
  - साल
  - बाँस
- गौण वन
  - तेंदूपत्ता
  - खैर
  - हर्रा
  - लाख
  - गोंद व शिलाजीत आदि

3½ Excellent

सागौन ⇒ यह म.प्र. के 19.36% भाग पर विस्तृत
- उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन, 75-125 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों
- सागर, होशंगाबाद (बोरीघाटी), जबलपुर आदि

उपयोग - इमारती लकड़ी व फर्नीचर

साल ⇒ यह म.प्र. के 4% भाग पर
⇒ उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन, 125 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों

जिले - मण्डला, बालाघाट, सिधी, सिंगरौली आदि
उपयोग - रेलवे स्लीपर, भवन निर्माण, फर्नीचर आदि में उप

गौण वन => तेंदूपत्ता - यह सागर, जबलपुर, छतरपुर, भोपाल आदि
- बीड़ी उत्पादन में उपयोग

खैर वृक्ष => कत्था बनाया जाता
- शिवपुरी व बानमोर में कत्था बनाने का कारखाना

लाख - पलाश, बेर, कुसुम और अरहर के पौधो से लाख प्राप्त
- चूड़ी, सौन्दर्य सामग्री, औषधि में उपयोग

इस तरह म.प्र. में वनों में विविधता देखने को मिलती किंतु शहरीकरण व औद्योगिकीकरण ने इसके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाया अत: वनों के संरक्षण की दिशा में जोर देने की आवश्यकता

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

(Q) म.प्र. में कृषिविपणन की समस्याओं को लिखिये?

A. म.प्र. एक कृषि प्रधान राज्य है यहा प्रतिवर्ष लाखों टन खाद्यान्न पैदा होता जिसमें गेहूं, सोयाबीन, चना, अरहर आदि के उत्पादन में प्रथम स्थान है

• प्रदेश में कृषि की पैदावार अच्छी होने के बाद भी कृषि विपणन संबंधी अनेक समस्याये उत्पन्न होती -

- किसानों की बाजार तक पहुंच न होना
- परिवहन की सुविधा का अभाव
- किसान व बाजारों के बीच मध्यस्थों की भूमिका
- वित्त का अभाव
- भण्डारण की समस्या
- छोटे किसानों की अधिकता से खाद्यान्न का कम होना
- गाँव स्तर पर जागरूकता का अभाव
- किसानों में शिक्षा का अभाव आदि

उपरोक्त समस्याओं के होने से किसानों की बाजारो तक पहुंच सुनिश्चित नहीं हो पाती व उन्हें अपनी फसल का उचित दाम प्राप्त नहीं होता जिससे उनकी आय में कमी होती है

4

(5) भील जनजाति पर संक्षिप्त निबंध

म.प्र. की सबसे बड़ी जनजाति भील है जिसकी प्रजाति प्रोटोआस्ट्रेलाइड है भील शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'भिल्ल' से हुई जिसका अर्थ धनुष होता है अतः यह जनजाति तीरकमान चलानेवाली जाति

भील जनजाति का विस्तृत वर्णन एवं प्रभाव

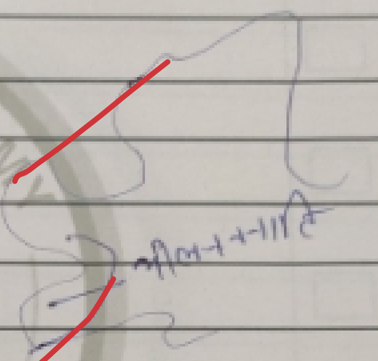

निवास क्षेत्र - झाबुआ, अलीराजपुर, धार/निमाड़

उपजातियाँ - भिलाला, बरेलिया आदि

शारीरिक बनावट - रंग काला, कद छोटा, घुंघराले बाल व चपटी नाक

सामाजिक स्थिति -> संयुक्त परिवार का प्रचलन
- पितृसत्तात्मक समाज
- सगोत्री विवाह वर्जित

आर्थिक स्थिति -> यह कृषि कार्य व मजदूर प्रवृत्ति होते यह आर्थिक रूप से कमजोर

सांस्कृतिक विशेषता -> होली के 7 दिन पहले भगोरिया उत्सव
- हिन्दू त्योहार को मनाते
- पिथोरा भीलों का प्रसिद्ध चित्र

• अतः राज्य प्रदेश में भील जनजाति अपना कला-पहचान बचाए हुए है अतः सरकार द्वारा इनके संरक्षण व आर्थिक विकास पर बल दिये जाने की आवश्यकता है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रतीक

(E) जैविक कृषि क्या है म.प्र. के संदर्भ में इसकी व्याख्या करें?

जैविक कृषि, कृषि की एक पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों व खरपतवारनाशियों के स्थान पर जीवांश खाद (जैसे कम्पोस्ट खाद, हरी खाद, गोबर की खाद) व जैव कीटनाशक का प्रयोग किया जाता है।

म.प्र. में जैविक कृषि पर काफी बल दिया जा रहा है एवं सरकार द्वारा निम्न कदम उठाये गये

- जैविक खेती विकास परिषद का गठन
- जैविक खेती प्रोत्साहन योजना की शुरुआत की गई जो टिकाऊ उत्पादन, उर्वरकों के संतुलित प्रयोग पर बल
- जैविक प्रमाणीकरण जिसका उद्देश्य जैविक उत्पादों को राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मानकों के रूप में प्रमाणिकरण करना
- जैविक कृषि नीति, 2011 जारी इसके अंतर्गत
  - (1) जैविक कृषि हेतु नीति-निर्माण
  - (2) वन आधारित उत्पादों को प्रोत्साहन
  - (3) स्वतः जैविक क्षेत्रों का संरक्षण व अधिसूचन करना।

इस तरह म.प्र. में जैविक कृषि को बढ़ावा देकर सतत विकास की अवधारणा को साकारित किया जा रहा है

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(6) भोपाल गैस त्रासदी पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये?

2-3 दिसंबर 1984 को भोपाल में स्थित यूनियन कार्बाइड कंपनी में गैस रिसाव की घटना घटित हुई जिसे भोपाल गैस त्रासदी के रूप में जाना जाता है।

भोपाल गैस त्रासदी को निम्न बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं—

मामला क्या => यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड की कीटनाशी कंपनी फैक्ट्री से मिथाइल आइसोसायनाइट का रिसाव हुआ।

कारण => टैंक में आवश्यकता से अधिक दबाव
- टैंक में पानी के रिसाव व मिथाइल आइसोसायनाइट गैस के पानी में मिलने से रासायनिक क्रिया हुई।
- अधिक दबाव के कारण टैंक का तापमान 200°C के पार हो गया जिससे टैंक सेफ्टी वाल्व खुल जाने से विषैली गैस का रिसाव हुआ।

प्रभाव – कई लोगों की जान गई
- अपंगता, आंखों, फेफड़े, तंत्रिका तंत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ।

- इस बीज का संक्रमण कई वर्षों तक रहा
- पर्यावरण पर दुष्प्रभाव

इस घटना ने देश को अचंभित किया व भविष्य में इस तरह की घटना न हो उसके लिये वैसी फैक्ट्री को लोगों की बसावट से दूर व सुरक्षा मानकों पर बल देने की आवश्यकता है।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रतीक द्वार..

04 (I)

महासागरों में लवणता के निर्धारक तत्वों का उल्लेख करो?

सागरीय जल के भार और उसमें घुले हुए पदार्थों के भार के अनुपात को सागरीय लवणता कहते है

सागरीय लवणता को नियंत्रित करने वाले तत्व निम्न लिखित है:

नियंत्रित तत्व
- तापमान
- वर्षा
- पवन
- नदियों का जल
- वाष्पीकरण
- अन्य

तापमान => तापमान का लवणता से सीधा संबंध है तापमान अधिक होने पर लवणता अधिक होती है

वर्षा => वर्षा लवणता को प्रभावित होती अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में लवणता कम विषुवतीय रे~~खा~~ क्षेत्रों में तापमान के अधिक होने पर लवणता कम इसका कारण वर्षा है।

पवन => अनुतट पवन से जलस्तर में वृद्धि व तापमान में वृद्धि से लवणता अधिक रहती अपतट पवन जलस्तर में कमी से तापमान कम अतः लवणता कम होती

नदियों का जल => नदियां जब अपना जल समुद्र में मिलती वहाँ की लवणता कम होजाती

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार-

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

वाष्पीकरण => वाष्पीकरण की दर अधिक होने पर लवणता अधिक उष्णकटिबंध क्षेत्रों में लवणता अधिक।

इस तरह उपरोक्त कारक लवणता को प्रभावित करते हैं।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(7) ज्वार-भाटा की उत्पत्ति व उसके महत्व का वर्णन करो?

सूर्य व चंद्रमा की आकर्षण शक्तियों के कारण समुद्र के जल के ऊपर उठने व नीचे गिरने को ज्वार-भाटा कहते हैं।

ज्वार-भाटा की उत्पत्ति के कारण → सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल → चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल → पृथ्वी का अपकेंद्रीय बल

→ ज्वार-भाटा के महत्व को इस प्रकार देख सकते हैं–

- मत्स्य पालन
- ज्वार के कारण जलयान आंतरिक बंदरगाहों तक आसानी से पहुँच जाते हैं।
- नदियों द्वारा बहाकर लाये कूड़े-कचरे को साफ करता व डेल्टा बनाने की गति धीमी होती
- ज्वार के कारण समुद्र में लवणता बनी रहती है
- यह समुद्रीय जलवायु को संतुलित करके रखता है

इस तरह समुद्र में ज्वार-भाटा का आना आवश्यक ताकि सागरीय पारिस्थितिक तंत्र संतुलित बना रहता है।

3

डेल्टा निर्माण संतुलित

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावना पर प्रकाश डालिये।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का तात्पर्य ऐसी गतिविधियों से जिसमें प्राथमिक कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण करके उनका मूल्यवर्धन किया जाता है। जैसे दुग्ध, फल, सब्जियों को पैकेज्ड खाद्य पदार्थों में परिवर्तित।

भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की असीम संभावनाएं हैं:

- भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसका उत्पादन 2019-20 में 2535 मिलियन टन का अनुमान
- फल व सब्जियों के उत्पादन पर भारत का दूसरे स्थान में होना
- दुग्ध उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान
- श्रम बहुलता अर्थात सस्ता श्रम
- जनसंख्या अधिक होने से मांग में वृद्धि
- मत्स्य उत्पादन भी अधिक मात्रा में किया जाता है।
- खाद्यान्नों में विविधता गेहूं, बाजरा, रागी, सरसों आदि।

अतः खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की अपार संभावना दिखाई देती है आवश्यकता है तो इस उद्योग के प्रोत्साहन व लोगों को कौशल विकास व जागरूकता की जिससे इस उद्योग को गति प्रदान की जा सके।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(L) मृदा अपरदन के कारणों का वर्णन करो।

मृदा अपरदन प्राकृतिक व मानवीय कारकों से घटित होने वाली भौतिक घटना है जिसमें वर्षा व पवन द्वारा मृदा की ऊपरी परत का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरण होता है इस घटना को मृदा अपरदन कहते हैं।

मृदा अपरदन के कारण

मानवीय कारक

- वनों की कटाई
- अति पशुचारण
- त्रुटिपूर्ण तरीके से कृषिकार्य जैसे झूम व पर्वतीय ढलानों कृषि भूमि के अनुसार न करना
- सिंचाई अवैज्ञानिक तरीके से सिंचाई ड्रिप व स्प्रिंकलर सिंचाई का प्रयोग नहीं
- विकासात्मक गतिविधियाँ आदि

प्राकृतिक कारक

- वर्षा जल व नदी द्वारा अपरदन
- पवन
- हिमानी
- समुद्री लहरें आदि

2

आवश्यक भूमिका

उपरोक्त कारक मृदा अपरदन के लिए जिम्मेदार हैं इनमें मानवीय कारकों में सुधार कर जैसे कृषि व सिंचाई की उचित विधियाँ अपनाकर, वनारोपण आदि कर इसे बहुत हद तक कम किया जा सकता है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(Mains Answer Sheet)

संख्या

Q.3 (A) भारत के चक्रवात प्रभावित क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए साथ ही इसके जोखिम को कम करने वाले उपाय?

भूमिका छोटी करो

चक्रवात वह न्यूनवायुदाब के केंद्र होते जिसके चारों ओर समदाब रेखाएं होती है एवं केंद्र से परिधि की ओर जाने पर वायुदाब बढ़ता है एवं पवनों की दिशा परिधि से केंद्र की ओर होती है उत्तरी गोलार्द्ध में इनकी दिशा घड़ी की सुइयों की विपरीत दिशा में व दक्षिणी गोलार्द्ध में इनकी दिशा घड़ी की सुइयों की दिशा के अनुकूल होती है ये प्रायः अण्डाकार, गोलाकार, 'V' आकार की आकृति के होते हैं।

चक्रवात को दो भागों में बांटा जाता है-

(1) उष्णकटिबंधीय चक्रवात
शीतोष्ण चक्रवात

भारत उष्ण कटिबंधीय चक्रवातों से प्रभावित होता है यदि हम भारत की भौगोलिक स्थिति पर नजर डालें भारत विषुवत रेखा के उत्तर में उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है जिसके पूर्वी क्षेत्र में बंगाल की खाड़ी व पश्चिमी क्षेत्र में अरब सागर स्थित है अतः भारत का चक्रवातों से प्रभावित होना आवश्यक है।

भारत के चक्रवात से प्रभावित क्षेत्र -

पूर्वी क्षेत्र => पं. बंगाल, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश आदि

पश्चिमी क्षेत्र => गुजरात, महाराष्ट्र

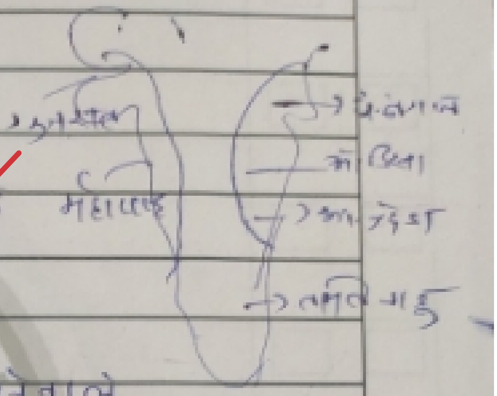

2015-20 में भारत में आने वाले चक्रवातों को देखा तो

2020 - अम्फान
2019 - फानी
- तितली आदि
→ पूर्वी क्षेत्र के चक्रवात

वही पश्चिमी क्षेत्र - निसर्ग चक्रवात

चक्रवातों के आने से अपार जन-धन की हानि होती है इसके जोखिम को कम करने के लिए निम्न कदम उठाये जा सकते है -

उठाये गये कदम

आपदा से पूर्व	आपदा के दौरान	आपदा के पश्चात्

आपदा से पूर्व :) चक्रवात से प्रभावित क्षेत्रों का मानचित्रीकरण

- चेतावनी प्रणाली विकसित
- आपदा प्रबंधन की शिक्षा स्थानीय स्तर व स्कूलों
- मैंग्रोव वनों को लगाकर चक्रवात की गति कम किया सकती है

आपदा के दौरान → बचाव कार्यक्रम
→ लोगों को आपदा प्रभावित क्षेत्र से दूर विस्थापित, सुरक्षित स्थान पर
- लोगों के लिए खाद्य व औषधीय सामग्री उप.

आपदा के पश्चात → पुनर्वास की व्यवस्था व रोजगार की उपलब्धता
- आपदा प्रभावित क्षेत्र में निर्माणात्मक कार्यों को करवाना आदि

इस तरह से चक्रवात के प्रभाव को न्यूनकिया जा सकता है इसके लिए भारत सरकार द्वारा आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 लाया गया तथा NDRF का गठन किया गया जिससे आपदा से प्रभावित क्षेत्रों में इस टीम को भेजकर त्वरित सहायता भेजी जाती है तथा इसके लिए फंड भी बनाया ताकि सहायता राशि भेजी जा सके

अत: चक्रवात से निपटने के लिए सरकार काफी सक्रिय रही है किंतु इसके साथ जनता, NGO, सिविल सोसायटी का साथ होना आवश्यक ताकि प्रभावी कदम उठाये जा सके।

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) | कौटिल्य एकेडमी सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न (9) हरित क्रांति की विशेषताएं एवं उसके सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का वर्णन कीजिए?

हरित क्रांति का संबंध कृषि क्षेत्र में उत्पादन तकनीक के सुधार एवं कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने से है। हरित क्रांति का जनक अमेरिकी वैज्ञानिक डा. नॉर्मन बोरलॉग को माना है भारत में इस क्रांति में डा. एम.एस. स्वामीनाथन ने अहम भूमिका निभाई है इस क्रांति के चलते भारत खाद्यान्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर बन गया है।

कारक को उल्लेख करें
उदाहरण
पंजीकरण

हरित क्रांति की विशेषताओं की बात करें तो वह निम्न है -

- उन्नत बीजों का प्रयोग पर बल दिया।
- खेती में उर्वरकों, कीटनाशकों का प्रयोग
- सिंचाई विधियों पर अत्यधिक जोर दिया
- कृषि नवीन कृषि विधियों को अपनाया जैसे बहुफसली, टिकसली आदि
- कृषि कार्यों की जैसे जुताई, कटाई आदि के मशीनीकरण पर बल दिया।
- कृषि सेवा केन्द्रों की स्थापना जो कृषकों में व्यावसायिक साहस की क्षमता विकसित कर सके
- कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान
- मृदा परीक्षण व भूमि संरक्षण आदि
- वित्त की व्यवस्था आदि

संख्या

(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार..

अतः हरित क्रांति ने उपरोक्त बातों को समाहित कर उत्पादकता में वृद्धि की गई किंतु इस क्रांति में जो प्रभाव उभरकर आये उनमें कुछ सकारात्मक प्रभाव व कुछ नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई दिये जो निम्नवत है–

सकारात्मक प्रभाव ⇒

सकारात्मक प्रभाव

↑

आर्थिक प्रभाव — सामाजिक प्रभाव — राजनैतिक प्रभाव

खाद्य सुरक्षा

आर्थिक प्रभाव → खाद्यान्न में वृद्धि

→ किसानों की आय में वृद्धि देखी गई

→ अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र में वृद्धि दिखाई दी

सामाजिक प्रभाव ⇒ ग्रामीण समाज का जमींदारों से मुक्त हुआ

⇒ जीवन स्तर में वृद्धि

⇒ परंपरागत प्रथाओं जजमानी प्रथा आदि की समाप्ति

राजनीतिक प्रभाव ⇒ किसानों व्यापारीय स्तर की राजनीति में भाग

– किसानों के मुद्दों का राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्व

नकारात्मक प्रभाव

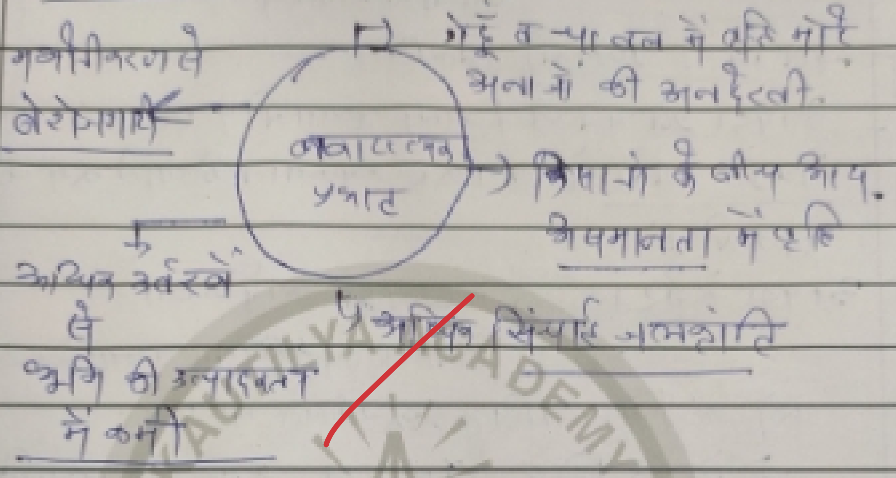

अतः 1966-67 से शुरू हुई हरित क्रांति ने तात्कालीन रूप से लाभ दिया वहीं दीर्घकाल में उसके नकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए जैसे उत्पादकता में कमी, जलाक्रांति आदि अतः हमें ऐसी कृषि प्रणाली को अपनाना चाहिए जो पर्यावरणीय रूप से अनुकूल हो जैसे जैविक कृषि, पारिस्थितिकी कृषि, इन कृषि विधियों को अपनाने से सतत विकास की अवधारणा को बल मिलेगा।

Q. 3 (B) महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति के उत्तरदायी कारकों का वर्णन करो?

सागरों में जल के एक निश्चित दिशा में प्रवाहित होने की गति को धारा कहते हैं तापमान के आधार पर जल धाराओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया ठंडी जल धारा जिसकी गति उच्च अक्षांश से निम्न अक्षांश वही गर्म जल धारा जिसकी गति निम्न अक्षांश से उच्च अक्षांश की ओर होती है। अतः केवल तापमान धाराओं की उत्पत्ति में सहायक नहीं होता बल्कि अन्य कारक भी अहम भूमिका निभाते हैं।

धाराओं की उत्पत्ति के कारकों को देखें तो निम्न कारक है-

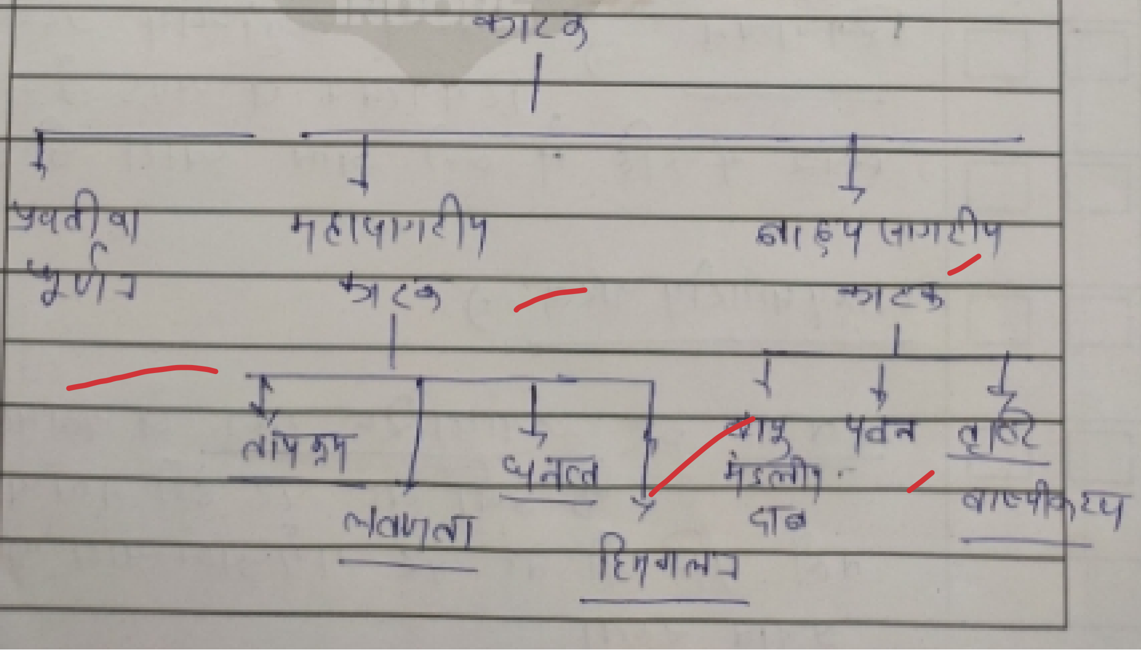

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

पृथ्वी का घूर्णन :)

पृथ्वी के घूर्णन से उत्पन्न कोरियोलिस बल के प्रभाव से उत्तरी गोलार्द्ध में जलधारा क्लाक वाइज व दक्षिणी गोलार्द्ध एण्टि क्लाक वाइज की दिशा में गति करती

महासागरीय :) तापमान :) तापमान का घनत्व के प्रतिलोमानुपात संबंध होता है अर्थात विषुवत रेखीय क्षेत्रों में तापमान अधिक से घनत्व कम तथा जलस्तर में वृद्धि जलधाराओं की उत्पत्ति होती है

लवणता :) समान अक्षांशीय प्रदेशों में लवणता में अंतर से जलधारा की उत्पत्ति

कम लवणता से अधिक लवणता वाले जल की ओर जल प्रवाह की उत्पत्ति

हिमगलन :) उच्च अक्षांशीय प्रदेशों हिमगलन से समुद्र के जल स्तर में वृद्धि से ठंडी जल धारा की उत्पत्ति

6

बाह्य सागरीय कारक :)

पवन :) व्यापारिक पवन से महासागर के पूर्वी तट पर ठंडी जलधारा वहीं पश्चिमी तट पर गर्म जलधारा का प्रभाव रहता

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार

यह आ पवनों के प्रभाव से महासागर के पश्चिमी भाग में ठंडी जलधारा वही पूर्वी भाग में गर्म जल धारा का निर्माण होगा।

महाद्वीपीय बनावट → महाद्वीपो की व्याकृति से धारा के टकराने से भी जलधारा की उत्पत्ति होती जैसे ब्राजीलियन जल धारा।

उपरोक्त कारकों से महासागरों में जल धाराओं की उत्पत्ति ने देख सकते है जिसमें सभी कारकों का सम्मिलित प्रभाव होता है जो महासागरीय पारिस्थितिक तंत्र में संतुलन बनाए रखती है साथ ही तटों के तापमान को भी प्रभावित करती है स्थल भाग में आर्थिक गतिविधियों का कारण भी बनती जैसे मछली पालन, पर्यटन आदि।